फरीदाबाद मजदूर समाचार

SAMPLE COPY

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 65 | नवम्बर 1993 | 1/-

इस अंक में

- गणपति-सेनापति
- झलानी टूल्स
- मलोट मिल तालाबन्दी
- खुफिया दर्पण
- जेद्दाह जेल
- जनतन्त्र-वनतन्त्र

बाटा

जल्दी सुखाने के लिये तेज गर्म हवा फेंकने वाले पँखे बाटा की फरीदाबाद फैक्ट्री में गर्मियों के मौसम में बन्द कर दिये जाते हैं पर दशहरे के बाद शुरू कर दिये जाते हैं। इससे उस स्थान पर काम करने वाले मजदूरों को बहुत तकलीफ होती है। 26 अक्टूबर को चैम्बर की तेज गर्मी के विरोध में 16 मजदूरों ने दिन के डेढ बजे काम बन्द कर दिया। इससे वलकनाइजिंग बॉयलर, स्टिचिंग आटोमेटिक और पैकिंग के छह-सात सौ मजदूरों का काम भी बन्द हो गया। मैनेजमेंट ने "काम नहीं, वेतन नहीं" का नोटिस लगा दिया।

जिन 6-7 सौ मजदूरों का काम बन्द हुआ था उन्होंने काम बन्द करने वाले सोलह मजदूरों को कोसना शुरू कर दिया: "अभी तक इनको गर्मी नहीं लगती थी। अचानक अब गर्मी लगने लगी। यह जान-बूझ कर नुकसान करवा रहे हैं।" "यूनियन लीडरों से बिना सलाह लिये क्यों कदम उठाया।" "हम घर से सुबह 5 बजे चल देते हैं। साइकिल से स्टेशन पहुँच कर गाड़ी पकड़ते हैं। इधर कोई भी अपनी मर्जी से काम बन्द कर देता है और नुकसान हमारा होता है।"

27 अक्टूबर को सुबह गेट मीटिंग में यूनियन लीडरों ने काम बन्द करने वाले 16 मजदूरों की आलोचना की और काम शुरू करने का आदेश दिया।

मजदूरों द्वारा एक-दूसरे का समर्थन करने की बजाय इस आपस के विरोध का अर्थ क्या है?

आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया, विशेषकर चेन सिस्टम में थोड़े से मजदूरों द्वारा पूरे प्रोडक्शन को ठप्प करने की क्षमता है। यह मैनेजमेंटों का एक मर्मस्थल है। लेकिन अपने मर्मस्थल पर उन्होंने दोहरा कवच लगाया है। ग्रुप इन्सैन्टिव और नया-नया चलन में आ रहा टीम वर्क मैनेजमेंटों का एक कवच है। उनका दूसरा कवच है एक के कदमों के लिये दूसरों को भी सजा देना!

उपरोक्त मामले में 16 के कदम के लिये बाटा मैनेजमेंट ने अन्य 600 को भी सजा दी।

ऐसे में आपसी सिरफुट्टौवल से क्या यह बेहतर नहीं था कि 600 मजदूर कदम उठा चुके 16 मजदूरों के पक्ष में आवाज उठाते? मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये क्या यह बेहतर नहीं था कि मैनेजमेंट पर बाटा फैक्ट्री के 1200 मजदूर दवाव डालते और 16 मजदूरों की समस्या शीघ्र हल करने पर जोर देते? इससे पूछना, फिर यह करना और फिर वह करना की बजाय चाणचक्क हड़ताल मैनेजमेंट को सोते में पकड़ने जैसा दांव नहीं है क्या? चाणचक्क हड़ताल करने की अपनी ताकत को कमजोरी मानना कहीं कागजी कानूनों को सिर नवाना तो नहीं है?

पाठकों से

इस अखबार में हम महिला एवं पुरुष मजदूरों के जीवन और आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा में पाठकों की अधिकाधिक भागीदारी के इच्छुक हैं। अपनी फैक्ट्री में, अपनी बस्ती में, अपनी निजी जिन्दगी में अथवा अन्यत्र निगाह में आई ऐसी सामग्री हमें भेजें। हम ऐसे मैटेरियल को प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे — नाम देना अथवा नहीं देना लिखनेवालों की इच्छा पर है। अपनी बात छपवाने के लिये आपको कोई पैसा खर्च नहीं करने पड़ेंगे। संक्षिप्त और विस्तार से अपनी बात हम तक पहुंचायें — खुद नहीं मिल सकें तो डाक से हमें भेजें।

इस अखबार में प्रकाशित सामग्री को स्वतंत्रता से पुनः प्रकाशित कर सकते हैं। ऐसे प्रकाशनों की हमें सूचना देंगे तो हमें अच्छा लगेगा।

फ्रान्स में एक तीखा संघर्ष

एयर फ्रान्स सरकारी कम्पनी है। कम्पनी की लड़खड़ाती हालत को सुधारने के लिये मैनेजमेंट ने ग्राउन्ड स्टाफ में से 4000 वरकरों की छंटनी और हवाई जहाजों में सामान लादने-उतारने वाले मजदूरों के वेतन में 36 परसैन्ट कटौती के प्रस्ताव पेश किये। ग्राउन्ड स्टाफ वरकरों ने इन प्रस्तावों के जवाब में 12 अक्टूबर से हड़ताल शुरू कर दी।

उधर ट्रान्सपोर्ट वरकरों (पेरिस मेट्रो व यात्री रेलगाड़ियों) और इलेक्ट्रिकल वरकरों ने 14 अक्टूबर को एक दिन की हड़ताल की। 15 अक्टूबर को फ्रान्स के कोने-कोने से आये तेल, ऑटो, रसायन, बिजली, खदान व पोस्टल क्षेत्रों के हजारों मजदूरों ने पेरिस में बेरोजगारी के खिलाफ जलूस निकाला।

ऐसे माहौल में एयर फ्रान्स के हड़ताली मजदूरों ने यूनियन लीडरों की शान्ति बनाये रखने और कानून का पालन करने की अपीलों को अंगूठा दिखा कर 18 अक्टूबर को पेरिस के दो प्रमुख हवाई अड्डों की उड़ान पट्टियों पर कब्जा कर लिया। पुलिस ने आँसू गैस के गोलों और पानी की तोपों की मदद से तीन घन्टों की जद्दोजहद के बाद उड़ान पट्टियां खाली करवाई। अगले दिन मजदूर और तैयार हो कर आये। आँसू गैस से बचने के लिये मजदूरों ने गैस मास्क पहनी और उड़ान पट्टियों पर जगह-जगह आग लगा दी। पुलिस के हमलों का मुकाबला करने के लिए मजदूरों ने पुलिस के साथ आँख-मिचौनी भी खेली और कई पुलिसवालों को एक गोदाम में बन्द कर दिया। एयर फ्रान्स को पांच सौ उड़ानें रद्द करनी पड़ी। 20 अक्टूबर को भी हड़ताली मजदूरों और पुलिस के बीच झड़पें होती रही और पेरिस के दो प्रमुख हवाई अड्डों से 500 उड़ानें रद्द करनी पड़ी। तब, 20 अक्टूबर को फ्रान्स के प्रधानमन्त्री ने हड़ताली मजदूरों से देश के बारे में सोचने को कहा। बीमार एयर फ्रान्स कम्पनी को बचाने के लिये प्रधानमन्त्री ने देश भक्ति के नाम पर मजदूरों से कुर्बानी माँगी। फ्रान्स के प्रधानमंत्री की बक-बक का जवाब हड़ताली मजदूरों ने युद्धक्षेत्र बढ़ा कर दिया। मजदूरों ने पेरिस के हवाई अड्डों को जाती सड़कों को भी जाम कर दिया। ग्राउन्ड स्टाफ की हड़ताल पेरिस के बाहर अन्य शहरों में भी फैलने लगी। 26 अक्टूबर से हड़ताल में ग्राउन्ड स्टाफ के साथ अन्य वरकरों के शामिल हो जाने की हालात बनती देख कर फ्रान्स सरकार ने 24 अक्टूबर की रात को कदम उठाये। एयर फ्रान्स के चेयरमैन ने इस्तीफा दे दिया और मैनेजमेंट ने छंटनी तथा वेतन कटौती के अपने प्रस्ताव वापस ले लिये।

प्रश्न : भाई साहब यह छोटे गेट पर ताला कैसे लगा है? लन्च में वरकर बाहर नहीं निकलते क्या?

गुडईयर का मजदूर (गेट के अन्दर से) : यह कोई छोटी-मोटी ऐसी वैसी कम्पनी नहीं है। यह इन्टरनेशनल कम्पनी है।

(फरीदाबाद में इन्टरनेशनल कम्पनियां तो कई हैं पर गुडईयर शायद अकेली फैक्ट्री है जिसके मजदूर लन्च टाइम में फैक्ट्री गेट के बाहर नहीं निकल सकते। कुछ समय से गुडईयर मैनेजमेंट ने यह रोक लगा दी है।)

पांच-छह अरब लोगों के हाथों में अर्थपूर्ण भविष्य की कुंजी है — पांच-छह अरब के सचेत सामूहिक हाथों में। मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये आवश्यक सचेत सामूहिक एकता में योगदान के उद्देश्य से हम यह अखबार प्रकाशित करते हैं।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोमिक बुंगी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

बाटा मजदूरों का यूनियन लीडरों को एक आवेदन

(दिनांक 30 अक्टूबर 93 का बाटा फैक्ट्री, फरीदाबाद के 600 के करीब मजदूरों द्वारा हस्ताक्षरित पत्र।)

महोदय,

27.8.92 को 742 बाटा मजदूरों के हस्ताक्षर वाला पत्र तत्कालीन महासचिव को दिया था। उस समय के कोषाध्यक्ष श्री मदन लाल खत्री जी ने यह लिख कर, "क्रान्तिकारी, संघर्षशील, मज़दूर हितैषी जजबातों वाला 1 से 19 पेजों का 742 बाटा मजदूरों के हस्ताक्षर वाला", पत्र रिसीव किया था।

चुनाव के समय श्री मदल लाल खत्री जी ने बाटा मजदूरों के सामने वायदा किया था कि अगर मैनेजमेंट द्वारा नाजायज काटा डी० ए० नहीं दिलाया तो सन्यास ले लूँगा।

23.3.93 को मौजूदा सचिव को 52 बाटा मजदूरों के हस्ताक्षर वाला रिमाइन्डर दिया था और तबसे हम इस बारे में लगातार रिमाइन्डर देते आ रहे हैं।

6.4.93 को 800 रुपये बोनस एडवान्स के बारे में कैन्टीन पार्क में महासचिव महोदय गेट मीटिंग कर रहे थे तब हम सब ने कटे डी० ए० के बारे में पूछा तो महासचिव जी ने कहा था कि 18 पाइन्टों में डी० ए० पर भी बातचीत चल रही है। परन्तु कटा हुआ डी० ए० हमें अभी तक नहीं मिला है।

27.10.93 को गेट मीटिंग में महासचिव जी ने ऐलान किया कि बिना लीडरों से पूछे कोई डिपार्टमेंट या जॉबों के लोग संघर्ष करेंगे तो बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। और महासचिव जी ने 26.10.93 के सोल पेट्रोलिंग के मजदूरों के काम बन्द का विरोध किया।

श्रीमान जी हम लोग 742 हस्ताक्षर कर कटे डी० ए० दिलाने की मांग आपसे किये और बार-बार आपको रिमाइन्डर दिये हैं। हम लोग बिना आपकी मर्जी से कोई कदम नहीं उठाया है। परन्तु कटा डी० ए० हमें अभी तक नहीं मिला है।

अतः हम आपसे पुनः मांग करते हैं कि आप हमें लिखित में सूचित करें कि कटे डी० ए० के बारे में आपने कौन-कौन से कदम उठाये हैं। और डी० ए० दिलाने के लिये उचित कार्यवाही करें।

यह कैसा मजाक है ?

दिन-भर विभिन्न काम करके थकी-हारी हजारों औरतें महानगर बम्बई में ठसाठस भरी लोकल ट्रेनों से अपने रैनबसेरों को लौटती हैं। ऊँघते अथवा तनावों से चिन्तायुक्त चेहरे और प्रतियोगिता की तैयारी वाली पुस्तकें अथवा सान्ध्य अखबार पलटते हाथ खचाखच भरे डिब्बों में एक अजीब-सी खामोशी उत्पन्न करते हैं।

इस 13 अक्टूबर को शाम को एक लेडीज स्पेशल में आग लगने की खबर फैलने पर ट्रेन रूकते ही हड़बड़ी में औरतें गाड़ी के दोनों तरफ कूदी। उसी समय दूसरी दिशा से आ रही ट्रेन के नीचे आकर49 महिलाओं की मृत्यु हो गई और 70 घायल हुईं।

महिला मजदूरों की इस अकाल मौत को एक्सीडेन्ट के खाते में डाल दिया गया है। मशीन से उँगलियाँ कटने को दुर्घटना करार देने की प्रवृति की यह एक और अभिव्यक्ति है।

और, आग-बिजली-मशीनों से फैक्ट्रियों में होती हजारों मौतों पर "सुरक्षा सप्ताहों" में जिस प्रकार के उपदेश दिये जाते हैं वैसे ही उपदेश 13 अक्टूबर की घटना के बाद बम्बई में स्टेशनों पर टाँग दिये गये हैं : "प्यारी बहनो, आप चुस्त, बुद्धिमान और शिक्षित हो . . . आगे से दहशत में हड़बड़ायें नहीं।"

झलानी टूल्स

मैनेजमेंट की मजदूरों से अपील : देश, फैक्ट्री तथा अपने परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिये ज्यादा से ज्यादा और उत्तम क्वालिटी का प्रोडक्शन करें ताकि वर्ल्ड-भर में हम खरीददारों को सन्तुष्ट कर सकें।

मजदूरों के उज्ज्वल वर्तमान की एक झलक : चद्दरें टूटी होने की वजह से थर्मल पावर हाउस की झलानी टूल्स प्लान्टों में घुसती राख प्रत्येक मजदूर के सिर पर व फेफड़ों में हर रोज औसतन एक किलो तो आती ही होगी। फैक्ट्री में से एग्जास्ट फैन या तो निकाल लिये गये हैं या बन्द पड़े हैं जिसकी वजह से फैक्ट्री के अन्दर के धूल, धुँआ, गैसें और गर्मी मजदूरों को बोनस में हैं। खस्ता हाल मशीनें और टूटे-फूटे फर्श मंच सज्जा हैं। लैटरिनों की भयंकर बदबू तो नाक हाथ से दबा कर सांस रोकने की कसरत के लिये है और फर्श पर फैली गन्द से पैर बचाने के प्रयास बैलेन्स करना सिखाते हैं। वैसे मैनेजमेंट ने 1982 में भी मजदूरों की सेहत के लिये आटोमेशन की थी, डेढ हजार मजदूरों से मार-मार कर इस्तीफे लिखवाना तो यूँ ही हाथ सेंकने के लिये था।

खांसते-हाँफते-आँखें मलते-चोट खाते मजदूरों के लिये एम्बुलेन्स है जिसमें हर समय लीडर और साहब लोग घूमते रहते हैं। काम करते-करते मजदूर कुछ ज्यादा ही बीमार हो जाते हैं इसलिये मैनेजमेंट ने फस्ट एड के चार वरकरों में से दो को निकाल दिया है और दो की ट्रान्सफर कर दी है। डॉक्टर द्वारा हर साल फैक्ट्री में आ कर मजदूरों के स्वास्थ्य की जांच करने की कानूनी खानापूर्ति भी दस साल से नहीं हुई है।

कैन्टीन में कभी दाल गायब तो कभी रोटी नदारद। झलानी टूल्स के मजदूर हैं कि फिर भी मोटे ही हैं इसलिये मैनेजमेंट उनका वजन कुछ कम करने के लिये उनके आठ घन्टे के काम को कभी चार तो कभी पांच घन्टे से कम बता कर थोक में वेतन कटौती कर रही है।

उज्ज्वल वर्तमान के समान ही मजदूरों के उज्ज्वल भविष्य की मैनेजमेंट ने गारन्टी दी है।

केरल में 28 हजार रोड़वेज वरकरों ने राज्य सरकार की वेतन जाम की पॉलसी को 9 दिन की हड़ताल द्वारा फेल किया। सरकार ने अपनी नीति वापिस लेने की घोषणा की है।

मलोट कताई मिल में तालाबन्दी

पंजाब के मलोट कस्बे स्थित सहकारी कताई मिल में 1300 लोग काम करते हैं। इस फैक्ट्री में टैक्निकल वरकर्स, सीटू और इफ्टू नामों से तीन यूनियनें हैं।

कानूनन देय न्यूनतम वेतन, ग्रेच्युटी और मेडिकल छुट्टियां मलोट स्पिनिंग मिल मैनेजमेंट मजदूरों को नहीं दे रही। इन तथा कुछ अन्य मांगों को ले कर तीनों यूनियनों ने सांझी संघर्ष कमेटी बनाई।

यूनियनों की सांझी संघर्ष कमेटी के आहवान पर फैक्ट्री में 19 जनवरी को एक दिन की हड़ताल रही। कोआपरेटिव मिल मैनेजमेंट ने इसके लिये मजदूरों की आठ दिन की तनखा काट ली।

यूनियनों की सांझी कमेटी ने लेबर कमिश्नर से गुहार की। लेबर कमिश्नर तथा एस डी एम मलोट की उपस्थिति में मैनेजमेंट और कमेटी की बात-चीत में लीपा-पोती हुई। जनवरी में एक दिन काम बन्द के लिये काटी आठ दिन की तनखा मैनेजमेंट ने जून आने तक भी नहीं दी। तब यूनियनों की सांझी संघर्ष कमेटी ने डी सी फरीदकोट के यहां पुकार की। 23 जून को डी सी साहब ने कमेटी को कटी तनखा दिलाने का भरोसा दिया।

जनवरी में एक दिन काम बन्द के लिये काटा गया आठ दिन का वेतन सहकारी कताई मिल मजदूरों को मिलते-मिलते जुलाई भी निकल गई। तब यूनियनों की सांझी संघर्ष कमेटी ने 5 अगस्त से फैक्ट्री में स्लो डाउन का ऐलान किया। इस पर मैनेजमेंट ने तीस मजदूर सस्पैंड कर दिये और वरकरों की जुलाई माह की तनखा रोक ली।

मलोट शहर की अन्य यूनियनों ने कताई मिल यूनियनों की सांझी संघर्ष कमेटी के समर्थन का ऐलान किया। मैनेजमेंट ने 12 अगस्त को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी।

13 अगस्त को मलोट शहर की प्रमुख ट्रेड यूनियनों ने कताई मिल सहायता कमेटी बनाई। उन्होंने एस डी एम को मेमोरेन्डम दिया और डी एस पी से फैक्ट्री खुलवाने का अनुरोध किया। डन्डा साहब ने 13 अगस्त को ही मीटिंग बुला डाली। डी एस पी, कताई मिल मैनेजमेंट और कताई मिल यूनियनों की सांझा संघर्ष कमेटी के बीच नेगोसियेशन के दौरान ही सांझा कमेटी के लोगों में जूतियों में दाल बंटने लगी।

कताई मिल में तालाबन्दी जारी रही। सहायता कमेटी ने सांझा संघर्ष कमेटी के लिये मलोट में चन्दा इक्ट्ठा किया। तालाबन्दी के शिकार कताई मिल मजदूरों की सहायता के नाम पर एकत्र किये गये चन्दे में से एक यूनियन ने 9 सितम्बर के भारत बन्द वाले ड्रामे को धुँआदार बनाने के लिये दौड़ रही जीपों में तेल भराया।

मलोट मिल में 12 अगस्त को की गई लॉकआउट अक्टूबर के आरम्भ में जारी थी। मिल कालोनी में मजदूरों की गिनती दिनोंदिन घट रही थी।

(जानकारी हमने पंजाबी पत्रिका 'सुर्ख रेखा' के अक्टूबर 93 अंक से ली है।)

गण-गणपति-विघ्नेश्वर-सिद्धीदाता-गणेश-सेनापति

अमित

'इसके प्रभाव से भावी राजकुमार राज से वंचित रह जाते हैं। कन्या को वर नहीं मिलता। स्त्रियों को संतान की प्राप्ति नहीं होती। विद्वान शिक्षकों को छात्र नहीं मिलते। व्यापार और कृषि में सफलता नहीं मिलती।'

यह चेतावनी 'मानव गृह सूत्र' नाम के ग्रन्थ में है जिसकी रचना ईसा पूर्व पांचवी सदी में हुई। मनुस्मृति, धर्मसूत्र, यज्ञवलक्य आदि ग्रंथों में भी इस प्रकार की बातें हैं। भय और तिरस्कार के इस पात्र को कई नाम दिए गए – विघ्नकृत, विघ्नेश, विघ्नराज, विघ्नेश्वर आदि। एक अन्य अधिक प्रचलित नाम है – गणपति।

इसी गणपति ने आगे चल कर सिद्धीदाता के नाम से ख्याति प्राप्त की, पूजा-अर्चना का पात्र बना। 'हिन्दू' कहे जाने वाली काफी आबादी द्वारा किसी भी शुभ कार्य की शुरूआत से पहले इसका आह्वान किया जाने लगा। विघ्नेश्वर से सिद्धीदाता – गणपति के भाग्य में यह उलट-फेर विचित्र सा लगता है। पर इन्सान के आगे किसी भगवान की नहीं चलती। इंसान किसी भगवान के हाथ का खिलौना हो न हो, भगवान निः संदेह इंसान के हाथ का खिलौना है। गणपति को अपनी जीवन यात्रा में कई रूप धारण करने पड़े हैं।

।। नमो गणेशाय विघ्नेश्वरः ।।

गण – मुख्यतः कन्द-मूल बटोर कर और शिकार द्वारा जीवन यापन करने वाले प्रारम्भिक मानव समुदाय। गणों के सदस्यों में बराबरी के रिश्ते थे। गणपति – गणों के मुखिया – आदर और अनुसरण के पात्र थे। यह पद न तो स्थायी होता था और न ही वंशागत। शुरू के वेदों में इन गणों और गणपतिओं की प्रशंसा में कई रचनाएं हैं। आज भी समता का भाव गण शब्द में निहित है हालांकि इसका प्रयोग सामान्यतः असमानताएं ढकने के लिए ही होता है।

धीरे-धीरे मानवों की उत्पादन क्षमता बढ़ रही थी। पशुपालन के उभरने के पश्चात उत्पादन में वृद्धि के साथ ही समाज के बंटने की सम्भावना पनपी। गणों की आपसी लड़ाईओं के जरिये सम्भावना को असलियत का रूप मिला। स्वामी गणों और दासों का उदय हुआ। स्वामियों में भी बड़े-छोटे के अंतर आने लगे। गणपति का पद पहले स्थायी और फिर वंशागत हुआ। इस समय तक एक नहीं कई गणपतिओं का उल्लेख मिलता है। मूर्तिकलाओं में गणपति हाथी, सर्प, सांड आदि रूपों में बनाए गए हैं। विभिन्न पशु विभिन्न गणों के चिन्ह होते थे। यही चिन्ह गणपतिओं के साथ जुड़ गए।

ईसा पूर्व पांचवीं सदी में लोह के बढ़ते प्रयोग और हल-बैल द्वारा कृषि ने सामन्ती व्यवस्था को आधार प्रदान किया और इसका फैलाव शुरू हुआ। नई व्यवस्था का मुख्य टकराव स्वामी गणों से था। साथ ही, स्वामी गणों के आपसी संघर्ष सामान्य स्थिति थी। स्वामी व्यवस्था के एक प्रमुख पक्षधर, शाक्य गण के गौतम बुद्ध ने शांति और अहिंसा का प्रचार किया। दूसरी ओर नई उभरती सामन्ती व्यवस्था के पक्षधरों ने गणों और गणपतियों को अपने प्रकोप का निशाना बनाया। गणपति को विघ्नेश्वर, विघ्नराज करार दिया गया। इस समय की मूर्तियों में गणपति महाकाल, मंजुश्री, विघ्न-अंतक आदि देवी-देवताओं के पैरों तले दर्शाया गया है। विघ्न-अंतक– एक नया देव खास गणपति से निपटने के लिए प्रकट हुआ। यह संघर्ष लम्बे समय तक चला।

गुप्तकाल में पहुंच कर ही सामंती व्यवस्था मजबूती से स्थापित हो सकी। स्वामी गण मुख्यतः ओझल हो चुके थे। विघ्न का अंत हो चुका था। ऐसे में गणपति की पुरानी अवधारणा के साथ महानता, वैभव और आडम्बर को जोड़ा गया। गणपति ने एक नया रूप धारण किया। पांचवी सदी में हस्तीमुख, एकदंता, लम्बोदरा वाला रूप उभरा। और एक अटपटा वाहन – चूहा। ऐसे प्रमाण भी हैं कि कुछ मतंग (हाथी) गण विजयी हुये और मूषक (चूहा) गण पराजित हुए थे। इसी की अभिव्यक्ति गणेश की नई छवि में हुई।

गणपति सिद्धीदाता बन गया। किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा पुरानी व्यवस्था के चिन्हों का बदले स्वरूप में प्रयोग कोई अनोखी बात नहीं है। अशोक ने भी दूर-दूर तक स्वामी गणों को परास्त करने के पश्चात स्वामी बुद्ध के नाम का प्रचार किया और शांति का संदेश दूर-सदूर तक फैलाया। इसी प्रकार यूरोप में सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी में पनपती माल अर्थव्यवस्था के समर्थकों ने धर्म की खूब खिल्ली उड़ाई, पर औद्योगिक क्रांति के पश्चात उन्नीसवीं शताब्दी में प्रबल बनने के पश्चात पादरियों को चन्दे देना शुरू किया।

गणपति के नए रूप का प्रचार बड़े पैमाने पर किया गया। स्कंद पुराण और ब्रह्म वैवर्त पुराण में मुख्य भूमिका गणपति को दी गई और उसे अवतार घोषित किया गया। एक उप-पुराण और लघु-उपनिषद की रचना केवल गणपति की बड़ाई में की गई। देवी-देवताओं के पैरों के नीचे से उठा कर उसे ज्ञान और बुद्धि का देवता बनाया गया। गणेश स्त्रोत की आठ प्रतियां बना कर बांटने की शुरूआत की गई। एक अतिउत्साही समर्थक ने गणपति की बुद्धिमता साबित करने के लिए एक 'गणेश गीता' ही लिख डाली। पर कृष्ण भक्तों ने जल्द ही पोल खोल दी कि 'गणेश गीता' भगवद गीता की ही हूबहू नकल थी। केवल कृष्ण का नाम गणेश से बदला गया था। लेकिन गणपति अब इन तुच्छ सांसरिक स्वार्थों से ऊपर उठ चुके थे।

देवलोक में भी धरती पर होने वाली बड़ी घटनाओं से गणपति को छुटकारा नहीं मिला। पंद्रहवी शताब्दी से मंडी के लिए उत्पादन तेजी से बढ़ा। विश्व भर में कई क्षेत्रों में उपभोग के लिए उत्पादन पर टिकी अर्थव्यवस्थायें डगमगा गई।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप में भी मंडी के लिए उत्पादन प्रबल होने के पश्चात भारत राष्ट्र का गठन हो रहा था। शासन तंत्र पर आधिपत्य के लिए नये दावेदार उभरे। रंग, भाषा, धर्म आदि की भिन्नता ने इस संघर्ष को और जटिल बना दिया था। गणपति में समय की जटिलता के अनुरूप स्वामी भक्ति और समता की परस्पर विरोधी प्रवृतियों का अनूठा मिश्रण था। बाल गंगाधर तिलक ने इस नये उभरते शासक वर्ग के लिए गणेश की उपयोगिता को पहचाना। घर की चारदीवारी से निकल कर गणेश ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। चूहे पर सवार गणपति अब सड़कों और गलियों में जलसों-जलूसों का नेतृत्व करने लगे। सफलता प्रदान करने वाला देवता अब उभरते भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतीक बना। गणपति के इस रूप में सैन्य प्रवृतियों का बोलबाला बढा।

इस शताब्दी के पूर्वार्ध में चल रही विश्वव्यापी उथल-पुथल के दौरान भारत में शासन चलाने वालों में बदलाव आया। लेकिन यह विश्व व्यवस्था की बढ़ती अस्थिरता और असुरक्षा से बचने का समाधान नहीं था। दुनिया-भर में बढ़ती पुलिस-फौजों के समानांतर गणेश उग्रता और आकार में बढ़ता गया। जीवन में बढ़ती निराशाओं, असफलताओं से पार पाने के लिए सफलता की कामना करना काफी नहीं रहा। मरने-मारने पर आमादा भीड़ दिनोंदिन बढ़ रही है। पर शासकों की उपासना, समानता के ढकोसले और अनुबुझ नियमों का बोझ इन संघर्षों को आत्मघाती रूप दे रहा है। गणेश इस बोझ का प्रतीक बन गया है। परन्तु निरन्तर बढ़ते आकार से इस बोझ के असहनीय बनने की सम्भावनायें बढ रही हैं।

।।। गणेशाय कथा इति ।।।

जनतन्त्र-वनतन्त्र

शेर सिंह

तांडव करते तन्त्र की वीभत्स हंसी के बीच सूत्रधार के गूंजते शब्द : अहं ब्रह्मास्मि ! मैं ही ब्रह्म हूँ ; जन और वन तो मेरे मुखौटे मात्र हैं ; तन्त्र ही सत्य है, तन्त्र ही शिव है, तन्त्र ही सुन्दर है. . . .

कश्मीर में तन्त्र के एक हवलदार को जलूस में से किसी ने घायल कर दिया। तन्त्र ने पचास को जन्नत और अस्सी को अस्पताल पहुंचा दिया।

सोमालिया में अंकुर विश्व तन्त्र की तौहीन कर रहे लोगों के होश ठिकाने लगा रहे कुछ फौजी मारे गये। महाबली जनतन्त्र के हेलिकाप्टरों ने उड़ान भरी। नारे लगा रही भीड़ में से सौ लोग आसमान से आग उगल रही मशीनगनों के मुंह में समा गये।

क्षणिक ?

दस साल पहले दिल्ली में तन्त्र की एक अलम्बरदार की हत्या। तन्त्र की शह पर तीन हजार केशधारियों को जलते टायरों के हार पहना कर अग्नि की भेंट कर दिया गया।

पचास साल पहले चेकोस्लोवाकिया में हिटलर द्वारा स्थापित फौजी गवरनर की हत्या। जिस गांव के पास हत्या हुई थी वहां के सब बाशिन्दों को एक कब्र में दफना दिया गया।

जनतन्त्र . . . वनतन्त्र . . . तन्त्र. . . तन्त्र. . . सूत्रधारों के समवेत स्वर : तन्त्र ब्रह्मास्मि !

और, तन्त्र पीड़ितों द्वारा एक तन्त्र पर चोट – नये तन्त्र के निर्माण के लिये . . .

खुफिया दर्पण

यह एक आम और जानी-मानी बात है कि हर देश में खुफिया पुलिस के मजबूत जाल होते हैं। आम मान्यता के अनुसार खुफिया विभागों का काम देश के अन्दरूनी और बाहरी दुश्मनों का पता लगाना, उन पर निगाह रखना और उनसे निपटना होता है। जासूसों द्वारा देश के चन्द दुश्मनों से निपटने के रोमांचक, नमक-मिर्च लगे किस्से फिल्मों और पत्र-पत्रिकाओं में आते रहते हैं। लेकिन, खुफिया विभागों और उनके तौर-तरीकों के बारे में विद्वानों के विचारों की सार्वजनिक अभिव्यक्ति शायद ही कभी देखने को मिलती है।

शासक गुटों में फेर-बदल के वक्त सतह में पड़ती दरारों से झांकने पर खुफिया जाल की कुछ हकीकत देखी जा सकती है। जासूसी के कुरूप ताने-बाने और भेदियों के पीले पड़े मुरझाये चेहरे फाइलों में गड़े मिलते हैं। हाल ही के एक उलट-फेर में फाइलों से लबालब भरे कई गोदामों की अधिकतर सामग्री बेकार हो गई इसलिये उसमें से कुछ सार्वजनिक हुई है। जर्मनी में प्राप्त हुई ऐसी सामग्री पर निगाह डालें।

पूर्वी जर्मनी की एक करोड़ साठ लाख आबादी में से चालीस लाख लोगों की फाइलें वहां की खुफिया पुलिस, स्टासी के गोदामों में मिली हैं। यह फाइलें दो सौ किलोमीटर लम्बी अलमारियों की जगह घेरे हैं। खुफिया पुलिस के रेगुलर कर्मचारियों के अलावा डेढ लाख पार्ट-टाइम भेदियों की हाड़-तोड़ मेहनत ने अरबों पन्ने काले किये थे जिनमें से अब 200 करोड़ पन्ने ही बचे हैं।

खुफिया पुलिस स्टासी का लक्ष्य एक करोड़ साठ लाख लोगों की फाइल तैयार रखना था पर वह 25 परसैन्ट कामयाबी ही हासिल कर पाई। 40 लाख फाइलों में भी लाखों फाइलें तो ऐसी मिली हैं जिन पर साहब लोग एक नजर भी नहीं डाल पाये थे। इस बेतुकी स्थिति का एक प्रमुख कारण कागज रंगने और फाइलें बनाने की पुरानी तकनीक थी।

हर देश की सरकार आज इस क्षेत्र में आधुनिकीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। कम्प्यूटर और सुपर कम्प्यूटर आज खुफिया विभागों में आम चीज हो रहे हैं। ऐसे में देश की एक चौथाई आबादी पर फाइलें शीघ्र ही प्राचीन काल की चीजें नजर आयेंगी और शत-प्रतिशत आबादी पर खुफिया रिपोर्टों के सरकारी कम्प्यूटरों पर छा जाने की सम्भावना है।

सौ प्रतिशत आबादी पर खुफिया सूचनायें एकत्र करने का अर्थ क्या है? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि सरकारों की निगाहों में उनके सब नागरिक कभी-भी बागी हो सकते हैं? क्या शासकों की यह चेतना उस हकीकत का वास्तविक चित्रण नहीं है जिसमें वे शासन करते हैं?

जेद्दाह जेल

9 जुलाई को हमारे मुख्य सम्पादक दफ्तर नहीं आये। यह एक बहुत ही अनहोनी बात थी। नामी हारवर्ड विश्वविद्यालय में पढ़े फारूख लुकमन समय और काम के बेहद पाबंद थे। अगले दिन भी उनके काम पर नहीं आने पर जब हमें चिंता होने लगी तब खबर मिली कि हमारे अखबार 'गल्फ टाइम्स' के मुख्य सम्पादक फारूख लुकमन किसी काम से बाहर गये हैं और कुछ समय बाद आयेंगे।

11 जुलाई को मैं कम्प्यूटर ऑन करके काम शुरू ही करने वाला था कि रिसेप्शन से मुझे फोन आया कि मुझसे कोई मिलने आया है। वहां पहुंचने पर आम कपड़ों में मुझे दो सऊदी मिले। उन्होंने बताया कि वे गृह मंत्रालय से थे और चाहते थे कि पूछताछ के लिये मैं उनके साथ जाऊँ। मेरे यह पूछने पर कि किस चीज के बारे में वे मुझसे पूछताछ करना चाहते हैं, उनमें से एक ने कहा कि इस बात को अभी छोड़ो और चलो। "अपने सम्पादक को बता आता हूँ" मैंने कहा ही था कि गुस्से में "बस चलो" कह कर वे मुझे लेकर चल दिये। बाहर पुलिस की जीप की बजाये कार देख कर मेरी सांस में सांस आई : मुझे कोई विशेष चिंता की जरूरत नहीं थी; मैं किसी राजनीतिक अथवा धार्मिक गतिविधि में शामिल नहीं होता था; सऊदी अरब में मेरा ग्यारह वर्ष का समय पूरी तरह घटना-विहीन था। मैं निश्चिंत-सा हो कर बैठ गया।

कार चलती रही। जेद्दाह शहर के बीचोंबीच स्थित जेल के नजदीक पहुँचने पर मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। वे मुझे जेल के अन्दर ले गये। वहां उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या तुम जानते हो कि तुम यहां क्यूँ हो?" मेरे द्वारा पूर्ण अनभिज्ञता जाहिर करने पर उन्होंने एक फाइल निकाली और कहा कि हमारे अखबार 'गल्फ न्यूज' के 7 मार्च अंक में छपी कॉमिक स्ट्रिप मेरे जेल में होने का कारण थी। कॉमिक स्ट्रिप के साथ शिकायत अरबी में लिखी थी इसलिए मुझे नहीं मालुम कि शिकायत क्या थी। मैंने उन्हें बताया कि कारटून में मुझे कोई आपत्तिजनक बात नजर नहीं आ रही क्योंकि उसमें हास्य ढंग से भगवान से उसके होने का सबूत मांगने पर बिजली की कड़क उत्तर था।

आगे पूछताछ में मैंने उन्हें बताया कि मैं अखबार का उप सम्पादक हूँ ; कि किसी के कहने पर वह कॉमिक स्ट्रिप नहीं छापी थी बल्कि छह साल पहले भी हमने अखबार में उसे छापा था; कि छपने से पहले सामग्री देखना मेरा काम था; कि मुख्य सम्पादक या अन्य किसी का उस सामान्य कॉमिक के छपने से कोई सम्बन्ध नहीं था; कि इसमें जिम्मेदारी वाली कोई बात थी तो वह सिर्फ मेरी थी; आदि-आदि। उन्होंने वह सब लिखा और फिर बोले कि हम तुम्हें गिरफ्तार कर रहे हैं।

वे मुझे बगल वाले कमरे में ले गये और वहां मेरे गले में नम्बर प्लेट डाल कर सामने से तथा साइड से मेरी फोटो खींची। पैड पर स्याही से मेरा अंगूठा गीला करके उसकी छाप ली। मैं सन्न था। अपमान से मेरा दिमाग सुन्न हो गया था। मेरे साथ यह सब हो रहा था वाली बात ही मेरा दिमाग नहीं पकड़ रहा था।

उन्होंने मुझे एक कमरे में ले जा कर बन्द कर दिया। उस कमरे में तीन सऊदी, एक मिश्र का और एक सोमालिया का भी बन्द था, पर मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। मुझे पता ही नहीं चल रहा था कि मेरा क्या होगा। अपने दफ्तर में भी मेरी किसी से बात नहीं हुई थी। मैं अचानक गायब हो गया था। और मुझे डिब्बे में बंद करके वे जैसे भूल ही गये। 15 दिन तक मुझसे किसी ने कोई बात नहीं की। हां, एक दिन मैंने दूर से 'गल्फ न्यूज' के मुख्य सम्पादक फारूख लुकमन को भी जेल में देखा।

25 जुलाई को फारूख लुकमन और मुझे अदालत में पेश किया गया। शरीयत कानून के मुताबिक हम पर मुकदमा चलना था। मैंने तीन मुल्लों को वहां बैठे देखा। मैं उनकी मुट्ठी में था। अपना पक्ष रखने के लिए मेरे पास कोई वकील नहीं था। शिकायत अरबी में पढ़ी गई और मुझे समझ में नहीं आया कि क्या कहा जा रहा है। 28 जुलाई को हमें सजा सुनाई गई। मुझे दो साल कैद तथा पांच सौ कौड़े (पचास-पचास की किश्तों में) लगाने और फारूख लुकमन को एक साल कैद व तीन सौ कौड़े लगाने की सजा दी गई।

मुझे दीखने लगा कि मैं जिन्दा जेल से नहीं निकल पाऊँगा। मैंने क्या अपराध किया था? मैं सदा ही एक कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। 1989 में मुझे दफ्तर में सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी घोषित किया गया था। दफ्तर में लिफ्ट के पास मेरी एक बड़ी-सी तस्वीर टांगी गई थी। कहीं कोई गड़बड़ी हो जाती तो मुझे पुकारा जाता था। और अब यह !

हफ्ते में मंगलवार को 'गल्फ न्यूज' से मेरे किसी सहकर्मी मात्र को मुझसे मिलने की इजाजत थी। उन मुलाकातों के वक्त ही मुझे पता चलता कि कई देशों में मुझ पर किये जा रहे इस अत्याचार के खिलाफ आवाज उठ रही है और कि बढ़ते दबाव की वजह से शायद मेरी सजा माफ कर दी जाए। लेकिन समय बीतता रहा और मुझे नींद आनी बंद हो गई। वैसे भी, कमरे में रात-भर चार ट्यूबलाइटों की तेज रौशनी रहती थी।

दो महीने बाद, 14 सितम्बर को रात के वक्त सिपाही मेरे कमरे में आए। मुझे विश्वास हो गया कि वे मुझे कौड़े लगाने ले जा रहे थे। मैं जिंदा नहीं बचूँगा। जेल के दफ्तर में मुझे फारूख लुकमन मिले – उन्हें रिहा किया जा रहा था। 15 सितम्बर की रात के सन्नाटे में मुझे भी जेल से निकाल कर बम्बई के लिए हवाई जहाज में बैठा दिया गया।

(सामग्री हमने 'इलस्ट्रेटिड वीकली' के 9–15 अक्टूबर अंक में श्री शिवराम बलराम मेनन द्वारा बयान आपबीती से ली है।)

शासक वर्ग में उभरती नई सहमति

● प्रमुख अंग्रेजी अखबार 'स्टेट्समैन' के पूर्व सम्पादक 2 नवम्बर के 'पायनीयर' में ताना-बाना बुनते हैं :

भारत जैसे देशों में मजदूरों-मेहनतकशों द्वारा अपने हित में सामुहिक कदम उठाना प्रगति में बाधा है। बोलने की आजादी, लिखने की स्वतंत्रता, जलसे-जलूस का हक, जीने का अधिकार आदि विलासितायें हैं कमजोर देशों के लिए। जो लोग मानवाधिकार- इन्सानी हुकूक के नाम पर उपरोक्त आजादियों की वकालत करते हैं वे जाने-अनजाने में शक्तिशाली देशों द्वारा कमजोर देशों को कमजोर ही रखने की साजिश में हिस्सेदार हैं। इन्दिरा गांधी ने इस इस हकीकत को समझ कर इमरजैन्सी लागू की थी। कोरिया, चीन, ताइवान, सिंगापुर द्वारा आजादी-वाजादी को वजन नहीं देकर प्रगति करना इन्दिरा गांधी की दूरदर्शिता के सबूत हैं।

● टाइम्स ऑफ इंडिया की 'इलस्ट्रेटिड वीकली' (अक्टूबर 9–15 अंक) में :

प्रश्न : दिवालिया जर्मनी को विश्व शक्ति बनाने वाली हिटलर की कौन-सी नीतियां भारत के काम की हैं?

उत्तर : मजदूर संगठनों को कुचलने, वरकरों की वेतन वृद्धि पर रोक और हड़तालों पर पाबन्दी की हिटलर की नीतियों ने जर्मनी को विश्व शक्ति बनाया था।

● अंग्रेजी अखबार 'पायनीयर' का दो नवम्बर का सम्पादकीय :

देश में बढ़ती अव्यवस्था से निपटने के लिए फौज के प्रभावशाली इस्तेमाल के वास्ते हिम्मत-हौसले वाली सरकार का समय आ गया है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे के ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73